अध्याय-द्वादश

संदेश

कुण्डल (**19** मात्रिक)

गवल्गणसूनु[1] क्या संदेश लाये ।
विराटाधिप पुरी से लौट आये ।
सभा थी शांत गहना थी श्रुषूसा[2] ।
सकल जन धारते औत्सुक्य भूषा ॥1॥

कहा क्या धर्मसुत[3] ने पार्थ ने है ।
सुगूढ़ा वाक् वह किस अर्थ में है ।
किया क्या है उन्होंने आज निश्चय ।
तर्कणा[4] युक्त थे नरपति सविस्मय ॥2॥

तभी संजय उपस्थित थे वहां पर ।
कृताननि[5] भूप आसन पुर:[6] जाकर ।
अनुज्ञा प्राप्त वे इस भांति बोले ।
काल ज्यों स्वत: गूढ़ रहस्य खोले ॥3॥

निवेदित सकल गुरूजन पद प्रणति[7] है ।
कुशल कौन्तेय धर्मज धीर मति हैं ।
सदा वांछित उन्हें शिव कौरवों का ।
उदय वे चाहते सब पौरवों का ॥4॥

कहा कुरूवंश संतत ऋद्धि पाये ।
महोद्यम में सदा शुभ सिद्धि पाये ।
बढ़े जन प्रीति वर्धित लोक निष्ठा ।
मिले नृपमान चिर तक हो प्रतिष्ठा ॥5॥

त्रयोदश वर्ष तक है धर्म पाला ।
भूलकर अब पुन: इतिहास काला ।
द्यूत छल अपहृता श्रीविमल को पा ।
रहेंगे शांति से धृतमति अकोपा ॥6॥

1. गवल्वण के पुत्र संजय	4. तर्क वितर्क
2. सुनने की इच्छा	5. प्रणाम करके
3. युधिष्ठिर	6. सामने
7. नमन	

अत: कर्तव्य यह कुरू राज[1] का है ।
यही मंतव्य प्रज्ञ समाज का है ।
पुन: होवे हमारा प्रस्थ खाण्डव ।
पुरी मयजा[2] मिले हों मुदित पाण्डव ॥7॥

साथ ही यह किरीटी[3] ने कहा है
नहीं अब धैर्य का लव[4] भी रहा है ।
कष्ट भोगे बहुत हमने विजन[5] में ।
मात्र प्रण पालते अब तक विपिन में ॥8॥

मिला अब यदि नहीं अधिकार हमको ।
व्यर्थ बल है परम धिक्कार हमको ।
नहीं रण भूमि निर्णय काम्य हमको ।
न अधिकृत न्यून अब उपषाम्य[6] हमको ॥9॥

धर्म को प्राण अपना मानता है ।
अभय क्या है वही नर जानता है ।
मनोबल त्याग तप संपत्ति अब है ।
हमें भी रणोद्यम आपत्ति कब है ॥10॥

न स्वीकृति या अस्वीकृति खेदकारी ।
उभयविधि कामना पूरी हमारी ।
मिला यदि राज्य तो सुख से रहेंगे ।
हुआ रण बाण तो अरि ही सहेंगे ॥11॥

गदा भैमी[7] बड़ी व्याकुल क्षुधित है ।
तृषा गांडीव की सुस्फुट[8] उदित है ।
कुंत[9] कौन्तेय[10] का है राह तकता ।
खड्ग माद्रेय[11] का रह-रह तमकता ॥12॥

1. धृतराष्ट्र	2. मय दानव निर्मित इन्द्रप्रस्थ
3. अर्जुन	4. कण
5. निर्जन, शून्य	6. शान्त करने योग्य
7. भीम की	8. प्रकट, स्पष्ट
9. भाला	10. युधिष्ठिर
11. सहदेव	

शिवेतर[1] सूचिका है शिवा[2] वाणी ।
रथानुग[3] हो रहे हैं घोर प्राणी ।
अपशकुन घोर रण के हो रहे हैं ।
चतुष्पद[4] भी स्वधीरज खो रहे हैं ॥13॥

समय अब स्वल्प ही देखो बचा है ।
करें कुरू शीघ्र जो उनको रूचा है ।
बचीं जो कामनायें शीघ्र पूरी ।
करें अथवा रहेंगी वे अधूरी ॥14॥

शीघ्र ही अगज[5] हम गजपुर[6] करेंगे ।
सहरि[7] हम अहरि[8] कुरू जनपद करेंगे ।
विस्यंदन[9] कुरू करेंगे स्यंदनात्मज[10] ।
सुस्यंदन[11] बनेंगे क्षत गहन शस्त्रज ॥15॥

सुरालय[12] राज्य तुमको देय है अब ।
दिव्यता दान ही सुविधेय[13] है अब ।
पिता का दिव्य[14] गज[15] जाकर विलोको ।
करो विस्तार तृष्णा का न रोको ॥16॥

गुरूजन से न लिया कभी तुमने नय[16] का पाठ ।
अध्यापक मेरे बने निषित सवेग विपाठ[17] ॥17॥

उत्सुक उड़ने के लिए हैं अमोघ मम भल्ल[18] ।
सज्जित हों सिर दान को कुरू के आहव मल्ल ॥18॥

न कुल कुटुंब समाज के द्वेषी रहे प्रशांत ।
नकुल आज व्याकुल करें कब अरिकुल को शांत ॥19॥

देवोपमगुणरूप भी रणदुस्सह सहदेव ।
दैवोपम[19] दुर्वार हैं सावधान नरदेव[20] ॥20॥

1. अशुभ	2. गीदड़ी	3. रथ के पीछे चलने वाले
4. पशु	5. बिना हाथी के, गजशून्य	6. हस्तिनापुर
7. केशव सहित	8. बिना घोड़ों के	9. रथहीन
10. पवन पुत्र भीम	11. तेज बहने वाले	12. स्वर्ग
13. करणीय	14. स्वर्ग का	15. ऐरावत
16. नीति	17. बाण का एक प्रकार	18. बाण का एक प्रकार
19. नियति या भाग्य के समान		20. राजा

यद्यपि है शबराचरित[1] शकुनि[2] वधादि कुकर्म ।
रण में हो प्रवराचरित[3] अनुजविधीत सुधर्म ॥21॥

बलविक्रमविषयुत कुटिल गरलोदवमन अकर्ण[4] ।
परछिरद्रान्वेषी कुमति होगा कर्ण विवर्ण ॥22॥

रण अवसर दाता बने यदि कुरू विग्रहमूर्ति ।
कर लेंगे द्रुत वृकोदर[5] हो कृतज्ञ प्रणपूर्ति ॥23॥

ले आज्ञा गुरू द्रोण की रण में आशु प्रवेश ।
करने को उद्यत खड़े सत्वर अरि यशशेष[6] ॥24॥

चरण बंद्य रण पूर्व हैं विनत हमारे शीष ।
पूज्य पितामह का शुभद मिले अमोघाशीष ॥25

अथवा जो कुछ कहेंगे समझ उचित आचार्य ।
द्रोण या कि प्रिय पितामह वही हमें व्यवहार्य ॥26॥

हुई सुस्तब्ध क्षण को कुरू सभा थी ।
गई सद्य:[7] नृपानन की विभा थी ।
हिला धृतराष्ट्र का आमूल[8] अंतर[9] ।
प्रकट था भीत थे जिससे निरंतर ॥27॥

शांत थे शांतनव[10] संवाद सुनकर ।
तुष्ट थे भरद्वाजज[11] ज्ञानदिनकर ।
कहा कृप ने कि वार्ता धर्मयुत है ।
अनय के साथ शम जग में अश्रुत[12] है ॥28॥

1. शबर जैसी जंगली जाति द्वारा	2. पक्षी
3. श्रेष्ठ व्यक्ति द्वारा आचरित	4. सर्प
5. भीम	6. मृत, जिसकी कीर्ति
7. तुरंत, तत्क्षण	8. जड़ तक ही शेष बची हो
9. हृदय आचरण में लायी गयी	10. शांतनु पुत्र भीष्मष्
11. भारद्वाज पुत्र द्रोण	12. न सुना गया

विचाराम्बुधि निमग्न प्रतीत सौबल[1] ।
हुए दुस्षासनादिक तूर्ण[2] हतबल[3] ।
विविंषति[4] ने समर आसन्न जाना ।
मृत्यु मुख में स्वयं को निहित माना ॥29॥

कोप से हो गया आरक्त लोचन ।
हुआ वपु अरूण आभा का विमोचन ।
हुए अरूणाभ हीरक भूषणों के ।
मंदरूचि[5] मणि बिना ही दूषणों के ॥30॥

हुआ फिर सभा में स्वर उच्च गुंजित ।
असूया कोप मद ही ज्यों सुपुंजित ।
भीति रण की दिखाते हैं हमें वे ।
कहा है जो वही करनी करें वे ॥31॥

ज्ञात होगा उन्हें कुरू का सुविक्रम ।
करें तो भीरू वे रण का उपक्रम ।
षिष्य बलराम का हूं दृढ़ गदा है ।
दृप्त अरि को सदा यह स्वर्गदा[6] है ॥32॥

कहां अधिकार वह जो मांगते हैं ।
दुराषा मोघ[7] नभ पर टांगते हैं ।
कौन जो जीत सकता तात श्री को ।
हुए हैं राम[8] जिनसे प्राप्त ही[9] को ॥33॥

राम के षिष्य हैं गुरू द्रोण जैसे ।
हरा सकता उन्हें लघु शत्रु कैसे ।
अमर आचार्य[10] हैं गुरू सुत[11] अमर है ।
सुजय[12] हमको महाभैरव समर है ॥34॥

1. सौबल	5. क्षीण कान्ति	9. लज्जा
2. शीघ्र	6. स्वर्ग देने वाली	10. कृपाचार्य्य
3. बलहीन	7. व्यर्थ,	11. अष्वत्थामा
4. दुर्योधन का अनुज महारथी कौरव	8. परषुराम	12. सरलता से जीतने योग्य

अंग भी बचाना होगा सुदुष्कर ।
अंगपति[1] जब करेंगे घोर संगर[2] ।
आर्त रण में नियत कौन्तेय होंगे ।
धनुर्धर जब प्रवृत राधेय होंगे ॥35॥

कल्पना द्वीप पर नर[3] क्या खड़े हैं ।
धनुर्धर और भी भूपर पड़े हैं ।
पार्थगुरू शिष्यता जिनकी लिये हैं ।
वही भृगु[4] सुसेवित हमने किये हैं ॥36॥

कहा राधेय ने जब रूष्ट होकर ।
उठे तब भीष्म अपना धैर्य खोकर ।
कहा कुरूराज से निर्णय करो तुम ।
विषम संकट गजाह्वय[5] का हरो तुम ॥37॥

प्रकट जो हो रही है युद्ध भाषा ।
न्यायप्रति मूल में इसके निराशा ।
व्यपाश्रय[6] से करो संयुक्त उनको ।
अक्ष[7] से था छला हो क्रूर जिनको ॥38॥

न आहव[8] हो यहां आहूत राजन ।
न हो धर्मज्ञ का आगे विराधन[9] ।
द्वेष का कीट कृंतक कुल सुमन का ।
करो निर्जीव हर कर भार मन का ॥39॥

कोप धर्मस्थितों का घोर होता ।
अत: जागो बनो शमयज्ञ[10] होता[11] ।
शांति से ऋद्धि होती है प्रसूता ।
प्रजा की प्रीति बढ़ती है प्रभूता[12] ॥40॥

1. कर्ण	5. हस्तिनापुर	9. क्रुद्ध करना
2. युद्ध	6. उत्तराधिकार, शरण लेना	10. शान्ति
3. अर्जुन	7. जुआ	11. हवन करने वाला
4. परशुराम	8. युद्ध	12. प्रचुर, बहुत अधिक

सकल पाण्डव सदा दुर्जय रहे हैं ।
धर्म हित ही सदा अनुषय[1] सहे हैं ।
किया मख[2] दिग्विजय संपन्नता पर ।
उन्हें फिर राज्य दो सादर बुलाकर ॥41॥

हुआ यदि युद्ध तो सब कुछ मिटेगा ।
न कुरूजनपद न सिंहासन टिकेगा ।
नहीं होंगे कभी विपदाब्धि त्राता ।
कर्ण या राज महिषी के सुभ्राता[3] ॥42॥

भीम अर्जुन रणाग्र समक्ष होंगे ।
नहीं उस काल रक्षक अक्ष[4] होंगे ।
विदारित आयुधों से वक्ष होंगे ।
यान रत जब महारथ दक्ष होंगे ॥43॥

न भूलें वृत्त हम वैराट[5] रण का ।
हरा जब मान सारे वीर गण का ।
अकेला युद्धरत था तब धनंजय[6] ।
मिली थी स्वप्न में क्या कर्ण को जय ॥44॥

पराभव की बनी उद्घोष यात्रा ।
याद है सुयोधन की घोष यात्रा ।
सुवंदित जिसे करते नित्य वंदी[7] ।
हुए वन में विवश गंधर्व वंदी[8] ॥45॥

नहीं तब तीर्थ यात्रा पर गया था ।
उस समय कर्ण क्या योद्धा नया था ।
बचाये बांधवों के प्राण तब थे ।
तुम्हारे महारथ ये त्राण कब थे ॥46॥

1. दुःख	4. पाषे	6. अर्जुन
2. यज्ञ	5. विराट देश का	7. स्तुति गायक, चारण
3. गांधारी के भाई शकुनि		8. कैदी

कर्ण गत जब हुई यह भीष्म वाणी ।
हुआ आवेषमय पौरूष प्रमाणी ।
सदा कुरूवर मुझे आक्षेप्य पाया ।
लगा यह कर्ण शाश्वत ही पराया ॥47॥

बता दें आर्य क्या किल्विष[1] किया है ।
सदा अवहेलना का विष पिया है ।
सदा मेरी समस्थिति धर्म में है ।
रही अनुरक्ति मैत्री मर्म में है ॥48॥

कहा तब भीष्म ने वसु[2] जान लो तुम ।
संख्य के तत्व को पहचान लो तुम ।
सखा वह है करे अघ[4] से निवारित ।
न अनुलोमार्थता जो करे धारित ॥49॥

आव्हान जो समर का करते उन्हें क्या ।
आभास है अतुलनीय विनाष का भी ।
नाना महास्त्र रण में जब मुक्त होंगे ।
होगी मही सकल श्री अभिवंचिता सी ॥50॥

द्रोण ने भी समर्थन देवव्रत का ।
किया कह मार्ग बस यह है सुकृत[6] का ।
शमाश्रय[7] नृपति श्रेयस्कर यहां है ।
समाश्रय[8] युध्द का फलप्रद कहां है ॥51॥

नहीं कुछ ध्यान देकर शम वचन पर ।
उपेक्षित सा किया नृप ने कुमन कर ।
हुए जिज्ञासु पाण्डव सैन्य बल के ।
शब्द के साथ संजय अश्रु छलके ॥52॥

1. पाप	4. पाप	7. शान्ति का आश्रय
2. कर्ण	5. हां में हां मिलाने वाला	8. आश्रय
3. मित्रता	6. पुण्य	

सप्त अक्षौहिणी बल[1] पाण्डु दल है ।
विराटानीक द्रौपद बल प्रबल है ।
महारथ सात्यकी रणधीर भी है ।
और सौभद्र[2] सा बलवीर भी है ॥53॥

सुना यह भूप चिंता मूढ़ होकर ।
लगे कहने सहज भी धैर्य खोकर ।
मुझे भय युधिष्ठिर के कोप का है ।
मुझे भय धर्म क्षति आरोप का है ॥54॥

उठा तब सुयोधन बल दृप्त मानी ।
कहा हे तात आप समर्थ ज्ञानी ।
आपका देख कातर भाव जागा ।
स्वयं को मानता हूं मैं अभागा ॥55॥

रखें विष्वास मेरी शक्ति पर भी ।
तात के चरण में अनुरक्ति पर भी ।
न कुरू अपमान सोढ़ा[3] आपका सुत ।
शत्रु का नाश होगा देखना द्रुत ॥56॥

करूण स्वर अंबिका[4] के तनय बोले ।
कौन इस मूढ़ के युग नेत्र खोले ।
पितामह आप ही इसको सुमति दें ।
रहा इस कार्य में असफल कुमति मैं ॥57॥

कहा तब भीष्म ने हे वत्स सुन लो ।
श्रेय का पंथ है ऋजु[5] आशु चुन लो ।
सुयश के साथ ही श्री शक्ति पाओ ।
पुन: अग्रज पृथात्मज[6] को बनाओ ॥58॥

1. सेना	4. धृतराष्ट्र
2. अभिमन्यु	5. सरल
3. सहने वाला	6. युधिष्ठिर

परम अविजेयता कुरू को मिलेगी ।
नहीं परशक्ति[1] फिर हम पर चलेगी ।
रहोगे सत्य ही तुम चक्रवर्ती ।
अनुज वह पार्थ होगा पार्श्ववर्ती ॥59॥

वन्य उस प्रांत को विकसित किया था ।
नवलपुर जगत को मय[2] ने दिया था ।
परस्त्री तुल्य परश्री त्याज्य होती ।
अधिक तृष्णा सदा अनलाज्य[3] होती ॥60॥

न तव कृत दुष्कृतों[4] पर ध्यान देंगे ।
विगत का वे न कुछ संज्ञान लेंगे ।
भाग्य से स्वर्ण अवसर है उपस्थित ।
रहो मत अनय[5] पर अब भी अवस्थित ॥61॥

राज्य के लिए अधिकृत ज्येष्ठ ही हैं ।
श्रेष्ठ आचार जन के प्रेष्ठ[6] भी हैं ।
तदपि वे मांगते हैं राज्य आधा ।
न इसमें पुत्र है कुछ भी कुबाधा ॥62॥

बताना भेद यह तुमको उचित है ।
कृष्ण प्रभु है जगत उनका रचित है ।
वही नारायणाख्य मुनींद्र योगी ।
और नर हैं यही अर्जुन न भोगी ॥63॥

देवासुर संग्राम में पाकर इनका साथ ।
सुरपति[7] ने जय तरूणि का पकड़ा था शुभ हाथ ॥64॥

कालकेयदानवदलन[8] शातित[9] कवच[10] निवात ।
नरऋषि ही नर रूप हैं परम अमोघाघात[11] ॥65॥

1. शत्रु की शक्ति	5. अनीति	9. काटा हुआ
2. मयदानव	6. परमप्रिय	10. निवात कवच नाम के असुर
3. आग में घी	7. इन्द्र	11. जिसका आघात अचूक हो
4. पाप	8. कालकेय राक्षस	

अतएव सुत अब मान तज बस शांति हित उद्यम करो ।
कुरू गुरू सखादिक की सकल उद्विग्नतापावक हरो ।
पाओ धवल यष जगत में हे मानधन नवधाम[1] हो ।
गजपुरगजारि[2] बने रहो उनके लिए मयधाम[3] हो ॥66॥

कुल विग्रहादिक छिद्र से कुछ लाभ ले पाये न पर ।
संयुक्त बलभासित रहे जग में प्रभाकर ज्यों अपर ।
वैमत्य घातक बंधुता का श्री नहीं कारण बने ।
सुविवेक अनिलाद्भूत हों ये आपदा वारिद[4] घनें ॥67॥

1. नवीन तेज	3. मय दानव द्वारा निर्मित इन्द्रप्रस्थ
2. हस्तिनापुर का सिंह	4. मेघ